संपादक के नोट

मैं मेरे प्रभु और उद्धारकरता येशु मसीह के अतुलनीय नाम से आप सबका अभिवादन करती हूँ। मैं विश्वास करती हूँ आप सब येशु मसीह के लहू तले सुरक्षित हो।

मसीह में मेरे प्रिय भाइयों और बहनों, मेरी हृदय की अभिलाषा और प्रार्थना इस्राएल के परमेश्वर से यह है कि वें बच जाएँ। **रोमियों १०:१ – भाईयों, मेरी हार्दिक अभिलाषा और परमेश्वर से उनके लिए प्रार्थना है कि वे उद्धार पाएं।** प्रेरित पौलुस हम से यहाँ आमने–सामने उसके हृदय की इच्छा के बारे में बात करता है। किसी भी तरह से इस्राएली लोग बचने चाहिए। किसी भी तरह से वें भी येशु मसीह के झुँड़ में आएँ। किसी भी तरह से उनके हृदय प्रभु येशु को प्रेम और उत्साह से स्वीकारें।

पुरने नीयम में, संत दाऊद हमे एक दीन प्रार्थना का बिनती करता है, यरूशलेम की शांति के लिए प्रार्थना करने की। **भजन संहिता १२२:६ – यरूशलेम की शांति के लिए प्रार्थना करो, "तेरे प्रेमी कुशल से रहें।**

परमेश्वर के प्यारे बच्चों, दिन और वर्ष मिट चुके हैं और हम अंत के समय में हैं। आज भी यहुदी लोग इस्राएल में पिता परमेश्वर की आराधना करते हैं। वें विश्वास नहीं करते कि येशु परमेश्वर का पुत्र है। वें विश्वास करते हैं कि वह नबिओं में से एक है। वे उसे अपना उद्धारकरता नहीं मानते। पर येशु के बिना और कोई मार्ग नहीं हमारे पापों का क्षमा पाने के लिए, वें नहीं जानते कि हम पिता के पास आ सकते हैं केवल येशु मसीह के द्वारा, जो मार्ग, सत्य और अनंतकालिक जीवन है।

परमेश्वर ने उन्हें एक निज प्रजा जैसे चुना है। परमेश्वर के वाचा के अनुसार इस्राएल के साथ, उसने उन्हें एक सुंदर भूमि जिसमें दूध और मधु की धाराएं बहती हैं, दी है।

परमेश्वर ने उन्हें कई वाचाए दी है।

जब हम परमेश्वर के वचन पर ध्यान करते है, वह हमसे स्पष्ट रूप से कहता है, कि येशु फिर से इस्राएल को आने वाला है।

जब येशु के चेले जैतून पर्वत पर आए, उस दिन, येशु बादलों सहित स्वर्ग में उठा लिया गया था।

जिस प्रकार येशु स्वर्ग में ले लिया गया, उसी प्रकार वह फिर एक बार आएगा, यह वाचा चेलों को उस दिन दिया गया था।

जब येशु फिर एक बार आएगा, उसके पाव जैतून के पर्वत को छूएंगे।

पढियें, पवित्र शास्त्र येशु के आने के विषय में क्या कहता है **ज़कर्याह १४:४–५,९ – उस दिन वह जैतून पर्वत पर जो पूर्व दिशा में यरूशलेम के सामने है, पैर धरेगा। तब जैतुन पर्वत बीचोंबीच पूर्व से पश्चिम तक फट जाएगा जिस से एक बहुत बड़ी खाई बन जाएगी। इस से आधा पर्वत उत्तर की ओर तथा आधा दक्षिण की ओर सरक जाएगा। तब तुम मेरे पर्वत की तराई से होकर भागोगे क्योंकि पर्वत की तराई आसेल तक पहुंचेगी, हाँ, तुम ठीक उसी प्रकार भागोगे जिस प्रकार यहुदा के राजा उज्जियाह के दिनों के भूकम्प के आगे भागे थे। तब यहोवा, मेरा परमेश्वर अपने समस्त जनों के साथ आएगा। यहोवा सम्पूर्ण पृथ्वी का राजा होगा। उस दिन यहोवा ही होगा तथा उसका ही नाम रहेगा।**

उस दिन इस्राएल की भूमि बहुत आनंदित होंगी। येशु अपने भक्तों सहित एक हज़ार वर्ष इस पृथ्वी पर राज करेगा।

जंगल और निर्जन–प्रदेश आनंदित होंगे, तथा अराबा मग्न होकर फूले–फलेगा। केसर के समान उसमें ढेरों कलियां निकलेंगी। वह आनंद के ऊँचे स्वर से हर्षित होगा और आनंद मनाएगा। उसको लेबनोन की महिमा और कर्मेल तथा शारोन का वैभव दिया जाएगा। वे यहोवा की महिमा और हमारे परमेश्वर के ऐश्वर्य को देखेंगे।

निर्बल हाथों को दृढ़ करो और थरथराते हुए घुटनों को स्थिर करो।

घबराए हुओं से कहो, "हियाव बान्धो डरो मत, देखो, तुम्हारा परमेश्वर पलटा लेने आएगा। परमेश्वर का प्रतिशोध आ पड़ेगा। वह तुम्हारा उद्धार करने आएगा।"

तब अन्धों कि आँखें खोली जाएंगी, तथा बहिरों के कान भी खोले जाएंगे।

लंगड़ा उस समय हिरन के समान चौकड़ियां भरेगा, तथा गूंगा अपनी जीभ से जयजयकार करेगा। क्योंकि जंगल में जल के सोते तथा अराबा में जल–धाराए फूट निकलेंगी।
सूखी भूमि ताल और प्यासी धरती जल का सोता बन जाएगी। जिस स्थान में सियार घ ूमे–फिरते हैं उसमें घास, नरकट और सरकण्डे होंगे।

वहां एक सड़क अर्थात राजमार्ग होगा और उसे "पवित्र मार्ग कहा जाएगा। अशुद्ध जन उस पर न चलने पाएगा; पर यह उन्ही के लिए होगा जो उस मार्ग पर चलते हैं, मूर्ख तो उस पर पैर भी न रखने पाएंगे।

न तो वहां सिंह होगा और न कोई हिंसक जन्तु उस पर चल पाएगा। ये सब वहां नहीं पाए जाएंगे, परन्तु जो छुड़ाए हुए हैं वे ही उस पर चलेंगे।

यहोवा के छुड़ाए हुए लौटकर जयजयकार करते हुए सिय्योन में आएंगे, उनका मुकुट अनंतकाल का आनंद होगा वे हर्ष और आनंद पाएंगे तथा शोक और आहें भरना जाता रहेगा।

मग्न और आनंदित हो और जीवित परमेश्वर की आराधना करों। तैयारी करो और तैयार रहो उसके दूसरे आगमन के लिए। तब तक कि हम फिर मिलेंगे अगले महिने इन्ही पन्नों में।

परमेश्वर आपको आशिष दें।

– पास्टर सरोजा म.

पवित्र आत्मा का फल और वरदान।

गलातियों ५:२२–२३ – परन्तु पवित्र आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शांति, धीरज, दयालुता, भलाई, विश्वस्तता, नम्रता व संयम है। ऐसे ऐसे कामों के विरूद्ध कोई व्यवस्था नहीं है। हमारा परमेश्वर हमारे जीवन में फलों को ढूँढता है, जब वह आत्मा का फल हमारे भीतर पाता है, वह हमारे लिए खुश होता है। इस प्रकार उसका नाम हमारे जीवनों द्वारा महिमा पाता है। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला कहता है, **यूहन्ना ३:७–९ – आश्चर्य न कर कि मैंने तुझ से कहा, "अवश्य है कि तू नया जन्म ले।" हवा जिधर चाहती है उधर चलती है और तू उसकी आवाज़ सुनता है, परन्तु यह नहीं जानता कि वह किधर से आती और किधर को जाती है। प्रत्येक जन जो आत्मा से जन्म लेता है वह ऐसा ही है। नीकुदेमुस ने उत्तर देते हुए उस से कहा, "यह सब कैसे हो सकता है?"** भीड़ यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के सामने आईं बपतिस्मा लेने के लिए यह सोचकर की वें फलदायक बनेंगे, लेकिन यूहन्ना न उनके हृदयों को पहचाना और इसलिए उन्हें चेतावनी दी। यह केवल परमेश्वर के अभिषेक से हम परमेश्वर के आत्मा का फल पा सकते हैं अनुग्रह सहित हमारे जीवनों में। इसलिए हमारी प्रार्थनाए परमेश्वर से यह होना चाहिए कि परमेश्वर मुझे तेरी आत्मा से अभिषेक कर ताकि मैं मेरे जीवन में आत्मा के फलों को पा सकूँ।" परमेश्वर की आँखें हमेशा उसके बच्चों पर हैं और वह आत्मा के फलों को हमारे जीवनों में खोजता हैं। पवित्र शास्त्रों में, हम देखते हैं कि बहुत लोग ने अपने–आप को परमेश्वर के हाथ में सौंप दिया ताकि वें उनके जीवन में परमेश्वर का फल पा सकें। नए नियम में, मत्ति के पुस्तक में लिखी गई हैं मरियम के बारे में, वह एक कुँवारी थी और उसकी मँगनी हुई थी शादी के लिए, इस समय जब परमेश्वर के दूत ने उससे कहा कि वह चुनी हुई थी येशु को इस संसार में लाने के लिए। उसने इसे नम्रता से स्वीकारा, उसका प्यार और शांति का गुण सबूत के जैसे उसमें दिखाई देता हैं। हम भी युसूफ़ के जीवन को देखते हैं, जब उसने पहिले मरियम के गर्भवती होने की ख़बर सुनी, वह उसे छोड़ देना चाहता था। ऐसे विचार उसके मन में आईं, इस संसार के मार्गों के अनुसार। लेकिन जब परमेश्वर के स्वर्गदूत ने उससे बात की, उसने परमेश्वर के वाणी को स्वीकारा, उसने मरियम के साथ एक धर्मी जीवन जीया और येशु मसीह के जन्म होने तक उसे नहीं जाना। हमे शारिरिक रीति से नहीं लेकिन पवित्र आत्मा के इच्छा के अनुसार जीना चाहिए। हमारे जीवनों में, परमेश्वर आज्ञा–पालन का फल को भी ढूँढता है। परमेश्वर आनंदित होना चाहिए फ़लों से जो अपने जीवन में हैं। **मत्ती १:१८ – अब मसीह का जन्म इस प्रकार हुआ कि जब उसकी माता मरियम की मंगनी यूसुफ के साथ हुई तो उनके समागम से पूर्व ही वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती पाई गई।** यहाँ हम देखते हैं कि परमेश्वर मरियम से प्रसन्न था, इस कारण उसे येशु की माता होने के लिए चुना और उसे प्यार और शांति से भरा ताकि वह इस संसार का सामना कर सके। अब हम

यूसुफ के जीवन को देखते हैं, **मत्ती १:२५ – और मरियम के पास तब तक नहीं गया जब तक वह पुत्र न जनी। और यूसुफ ने उसका नाम येशु रखा।** वह मरियम को नहीं जानता था येशु मसीह के जन्म होने तक। यह फल है परमेश्वर के आतमिक वरदान का। पवित्र–शास्त्र रोमियों मे कहता है कि लोग शारिरिक रीति से जीते हैं, सांसारिक रीति से सोचते हैं। जब जो आतमिक रीति से हैं, आतमिक रीति से जीते हैं। पाप का वेतन मृत्यु है, जब कि आत्मा का वेतन अनंतकालिक जीवन है। यहाँ हमने दो जवानों के जीवनों को देखा है, वह है मरियम और यूसुफ, दोनों परमेश्वर का भय मानते थे और उसकी आवाज़ को सुनकर उसे मानकर धार्मिक जीवन जीते थे। इसलिए उनका जीवन परमेश्वर के सामने आशिषित और फलदायक बना। परमेश्वर इन गुणों को हम में से हर एक के अंदर देखने आता है, परमेश्वर चाहता है कि हम उसके बातों को माने और यह भी की उसकी आवाज़ को सुने और आशिषित हो। जब हम परमेश्वर के नाम को हमारे जीवनों में ऊँचा और ऊँचा उठाने में असफ़ल होते हैं, तब हमे याद रखना है कि कुल्हाड़ी जड़ पर रखा हुआ है, हमे याद रखना है कि येशु इसलिए नहीं मरा कि हम इस संसार में तड़पते रहे। यह भी, येशु मृतकों में से इसलिए नहीं जी उठा कि हम इस संसार मे अनाथ रहे। येशु इस संसार में भेजा गया ताकि वह हमारे लिए मरे और इस तरह हम उसे प्राप्त करे और बचकर एक अनंतकालिक जीवन जीए। यह केवल बपतिस्मा पाने से ही नहीं कि हम येशु को हमारे जीवनों में पाते हैं, लेकिन उसे अपनाकर और उसकी इच्छा के अनुसार जीकर और उसके आज्ञाओं का पालन करकर ही हम सच्चाई से हमारे जीवन को जीते हैं जो परमेश्वर ने हमारे लिए योजना की है।

एक सिक्के के दो बाजूएँ होती है, सिर और पूंछ, इसी प्रकार पवित्र आत्मा का भी दो रूप हैं, फल और वरदान। जब एक व्यक्ति में आत्मा का वरदान है तो वह बहुतों को परमेश्वर के बचानेवाले अनुग्रह में ला सकता है। वह हर घुटने को टिका सकता है और हर जुबान से कहला सकता है कि "येशु क्रिस्त प्रभु है।" जैसे एलिय्याह ने किया, हम पढ़ते हैं **१ राजा १८:३९ – और जब सब लोगों ने यह सब देखा तो मुंह के बल गिर कर कहा, यहोवा ही परमेश्वर है! यहोवा ही परमेश्वर है!"** जब हम में आत्मा का वरदान हैं हमारे भीतर, तब हम साबित कर सकते हैं कि "परमेश्वर ही प्रभु है। लेकिन जब हम में आत्मा का फल है, हम परमेश्वर से साथ खड़े रहने के योग्य रहेंगे जब वह लौटेगा। हम जब पवित्र शास्त्र में दी गई दस कन्याओं की कहानी को जानते हैं, पाँच मूर्ख और पाँच बुद्धिमान। बुद्धिमान कन्याएँ आतमिक फलों से आशिषित हैं, वे उनके साथ अधिक तेल, बाती और माचिस ले आएँ। जब कि मूर्ख कन्याएँ उनके साथ कुछ न लाईं। जब दुल्हे के आने में देर हुई, सबका तेल कम होने लगा और दिए का लौ छोटा होने लगा। मूर्ख कन्याएँ इस कारण बुद्धिमान कन्याओं के पास आकर उनसे तेल माँगने लगी। लेकिन बुद्धिमान कन्याओं ने प्यार, शांति और अनुग्रह नहीं दिखाया, लेकिन उन्होंने उनसे कहा "जाओ और खरिदो जहाँ कही तुम्हे तेल मिले।"

बुद्धिमान कन्याएँ जानती थी कि अगर वे उनके पास जो था, बाँटती, उन दोनो के पास इतना नहीं बचेगा कि दुल्हा के आने तक लौ जलते रहे। इसलिए उन्होंने उत्तर दिया "जहाँ तुम्हे मिलेगा जाके वहाँ से खरीदो।" हम देखते है **मत्ती** २५:९ में – **परन्तु बुद्धिमानों ने उत्तर दिया, नहीं, यह हमारे लिए और तुम्हारे लिए पूरा न होगा। अच्छा है कि तुम दुकानदारों के पास जाकर अपने लिए मोल लो।** तेल, जो कि पवित्र आत्मा है, किसी से भी खरीदा नहीं जा सकता है, हम जानते हैं कि पतरस ने उस भविष्यवक्ता और जादू–टोनेवाले को क्या जवाब दिया जब उसने उससे पूछा कि क्या वह पवित्र आत्मा खरीद सकता है। उसने कहा न पैसा, न धन, न दौलत, न शिक्षण न तुम्हारा सामर्थ यह खरीद पाएगा, यह सब तुम्हारे साथ ही नाष हो जाए। पवित्र आत्मा एक वस्तु है जो कोई भी नहीं खरीद सकता है। यह फल केवल परमेश्वर के अनुग्रह और प्यार से प्राप्त होता है। जैसे ही बुद्धिमान कन्याएँ, मूर्खों से बात कर रही थी, दुल्हा आया। इसलिए जिनके दिओं में तेल था वें दुल्हे द्वारा अंदर लिए गए और दूसरे बाहर रह गए। हम पढ़ते हैं **मत्ती** २५:१०–१२ में – **जब वे मोल लेने को चली गई तो दुल्हा आ गया , और जो तैयार थीं, वे उसके साथ विवाह–भोज में अन्दर चली गईं। तब द्वार बन्द कर दिया गया। बाद में वे दूसरी कुंवारियां भी आकर कहने लगीं, "स्वामी, हे स्वामी, हमारे लिए द्वार खोल दे!" परन्तु उसने उत्तर दिया, "मैं तुमसे सच कहता हूँ, मैं तुम्हें नहीं जानता।** हम सब प्रभु के दुल्हन हैं, इसलिए हम बुद्धिमान होए और फलदायक जीवन जीए। इसलिए हमे कोशिश करनी है कि हमारे जीवन में फल और भेंट हो। इसलिए येशु ने कहा कि जिसका जीवन फलदायक नहीं वह काँटा जाएगा और आग में डाला जाएगा। हमारे गुण कार्यों और कौशल के द्वारा परमेश्वर हमसे प्रसन्न होना चाहिए। केवल यह हमारे जीवन में फल है। **यहेजकेल** ३८:७ – **"तू अपने चारों ओर इकट्ठी सारी सेना के साथ तैयार हो जा और अपने को तैयार रख। उनका रक्षक बन।** परमेश्वर यहाँ क्या बोलता है "तुम तैयार रहो और भीड़ को तुम्हारे संग तैयार करो। इसलिए यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला कहता है साँप के बच्चों, शापित पीढ़ी, बपतिस्मा लेने से तुम फलदायक नहीं बनोगे। तुम्हारे हृदयो में पाखंडी न बनो और न कहो कि हमने बहुतों को आते–जाते देखा है। इसलिए फलदायक बनो, भेंट पाओ और एक धार्मिक जीवन जीओ। यह जीवन परमेश्वर को आनंदित करता है। परमेश्वर के सच्चाई को स्वीकारो, इस प्रकार तुम अपने–आप को और तुम्हारे परिवार को तुम्हारे साथ तैयार कर सकते हो। जिनमें अभिषेक है वें प्रभु के लिए गवाही बनेंगे। हमे हमेशा प्रभु में बँधे रहना चाहिए। हमारी कलिसिया की कई शाखाएँ हैं, लेकिन कलिना के कलिसिया में रोस ऑफ शारोन सेविकाएँ कि जड़ है। इस पवित्र मंदिर में केवल वें रहेंगे जो परमेश्वर चाहता है कि रहे और लोग यहाँ तब तक रहेंगे जब तक कि परमेश्वर उन्हें यहाँ जड़ मे रखता है। जो यह सेविकाएँ को छोड़कर गएँ हैं उनकी मर्ज़ी से नहीं गए है लेकिन परमेश्वर ने उन्हे उसके नथों से फूँककर उड़ा दिया है। परमेश्वर के अनुसार वें मुर्झाए हुए घास के समान

हैं। परमेश्वर का नाम हमारे द्वारा उठाया और महिमा दिए जाना चाहिए और हमारे कार्यों से भी और हमारा जीवन एक गवाही बनना चाहिए। जितना परमेश्वर हमे चाहता है उतना शैतान भी जानता है। शैतान लगातार हमपर ऊँगली उठाकर परमेश्वर से कहता रहेगा, देखो,यह तेरे बच्चे हैं, उनके हृदयों में देखो।" इसलिए, हमारे कारण परमेश्वर के नाम कि निन्दा होगी। याद रखे, परमेश्वर तीसरे दिन जी उठा है, ताकि हम उसके लिए सर बने और न कि पूँछ। हमारा हर विचार और कार्य परमेश्वर को महिमा देना चाहिए। हम देखते हैं, चाहे महायाजक हो या पास्टर या अध्यक्ष सब में आतमिक फल और वरदान होना चाहिए। हम जानते है कि पौरानिक कालों में, जब महायाजक पवित्र मंदिर में प्रवेश करते थे, उनके कपड़े के छोर में घंटी और अनार का फल सिलाया जाता था। घंटी जब आवाज़ करती है यह "आत्मा का वरदान है, यह वरदान लोगों को प्रभु के बचाने वाले अनुग्रह में लाता है। अनार का मतलब है, "फल का वरदान" वचन कहता है कि तुम और मैं प्रभु के याजक हैं। **प्रकाशितवाक्य १:६ – और हमें एक राज्य तथा अपने पिता परमेश्वर के लिए याजक बनाया, उसकी महिमा तथा सामर्थ युगानुयुग हो। आमीन।** इसलिए हमारी ज़िम्मेदारी अब यह है कि हम परमेश्वर के लिए राजा और याजक बने। यह दोनो गुण प्रभु हम में पाना चाहिए और यह हम केवल आत्मा के अभिषेक से पा सकते हैं। हम पढ़ते है **यूहन्ना १५:१६ – तुमने मुझे नहीं चुना, परन्तु मैंने तुम्हें चुना और तुम्हें नियुक्त किया, कि तुम फल लाओ और तुम्हारा फल बना रहे, कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से माँगो, वह तुम्हें दे।** हमारे जीवन में यह फल भरा आत्मा हमे केवल येशु मसीह और उसके आत्मा के द्वारा मिल सकता है। अब, हम जानते हैं कि क्यों प्रभु ने हमे चुना है और हमे स्थापित किया है, उसके उद्देश्य के लिए ताकि हम फलदायक बन सके और फिर वह हम पर प्रसन्न हो सके। जब तक हम परमेश्वर से यह वरदान नहीं माँगेंगे हम यह हमारे जीवनों में नहीं पा सकते। प्रभु कहता है, "तुमने मुझे नहीं चुना, मैंने तुम्हे चुना है जब तुम कुछ न थे और इस संसार ने भी तुम्हें छोड़ दिया था। वह केवल इसलिए है कि तुमने पिता परमेश्वर से मेरे नाम से माँगा है, तुम आशिषित हो, इसलिए मुझ में बने रहो हमेशा, फलदार बनो। याद रखो, परमेश्वर हमे ढूँढते हुए नहीं आया जब हम ऐश्वर्यवान थे और हमे इस संसार में बहुत कुछ मिला, वह हमे ढूँढते हुए आया, तब हम पापी थे और आत्मा में दरिद्र थे। इसलिए अब हमारी झिम्मेदारी क्या है परमेश्वर की ओर? यह कि हम फलदायक बने और उसमे बने रहे। विश्वासियों को दो झुँड़ो में विभाजित किया जा सकता है, एक जो केवल आत्मा के वरदानो पर विश्वास करते हैं और आत्मा में फलदायक बनना भूल जाते हैं। प्रभु परमेश्वर ऐसे लोगों के झुँड़ पर क्रोधित होता है। वें फरीसी और सदूकी थे, उनके पास आत्मा का वरदान था, पर फल नहीं। इसी प्रकार हमारे जीवनों में भी, जब हम केवल आत्मा के वरदान पर ध्यान करेंगे, पर हमारे भीतर कोई फल नहीं होगा, तब परमेश्वर हमारे संग फरीसी और सदूकी जैसा व्यवहार करेगा। जब कि दूसरे इसके विपरित है, जो आत्मा

के फलों पर ध्यान नहीं देते। हमारे जीवनों में आत्मा का फल और वरदान दोनों में समानतल होना ज़रूरी हैं। **यूहन्ना १५:४** कहता है – **तुम मुझ में बने रहो और मैं तुम में। जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते।** परमेश्वर और पवित्र आत्मा का उपस्थिति हमारे जीवनों में होना बहुत ज़रूरी है। आत्मा के बिना हमारा जीवन कभी फलदार नहीं बन सकता है। इसलिए दाऊद कहता है **भजन संहिता १:१-३** – **क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो दुष्टों की सम्मति पर नहीं चलता, न पापियों के मार्ग में खड़ा होता, और न ठट्ठा करने वालों की बैठक में बैठता है। परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से आनन्दित होता और उसकी व्यवस्था पर रात–दिन मनन करता रहता है। वह उस वृक्ष के समान है जो जल–धाराओं के किनारे लगाया गया है, और अपनी ऋतु मे फलता है, और जिसके पत्ते कभी मुर्झाते नहीं**। इसलिए जो कुछ वह मनुष्य करता है वह उसमें सफ़ल होता है। परमेश्वर धर्मी मनुष्य को ढूँढ़ता है, कौन है वह? जो परमेश्वर के वचन पर दिन–रात मन लगाते हैं, और प्रभु परमेश्वर का प्यार, आत्मा का फल और वरदान हम में अपने–आप ही भर जाते हैं। इसलिए जब परमेश्वर हमे ढूँढकर आता है, वह हमे फल भरा और वरदान भरा पाता है। वरदान के द्वारा, बहुत–से लोगों को परमेश्वर के बचानेवाले अनुग्रह कि ओर ला सकता हैं, जब कि आत्मा के फलों द्वारा हमारे भीतर, हम अपने–आप को परमेश्वर के आनेवाले दिन के लिए तैयार कर सकते है, ताकि हम उसके संग उसके दूसरे आगमन के समय लीए जाए। इसलिए परमेश्वर बार–बार यूहन्ना **१५** में कहता है कि परमेश्वर पिता से मेरे नाम से माँगे बगैर तुम्हारे जीवन में कुछ भी नहीं जोड़ा जाएगा। जब येशु क्रूस पर मरा तीसरे दिन जी उठा और फिर स्वर्ग में लिया गया। उसने वादा किया अपने सहायक को भेजने का, वह है, पवित्र–आत्मा। **यूहन्ना** कहता है **१५:५** – **मैं दाखलता हूँ तुम डालियाँ हो। जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग हो कर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।** हम जानते है कि परमेश्वर ने हम सबको अलग–अलग खेतों से उखाड़ा है ज़ड़ के साथ उखाड़ा है और हमे लाकर हमारा रोपण उसके दाख की बारी में किया है, वैसे ही जैसे परमेश्वर ने अदन कि वाटिका में अलग–अलग प्रकार के पौंधो को लगाया। लेकिन अदन कि वाटिका में पिता परमेश्वर ने एक आज्ञा भी दी, वह था, "ज्ञान के वृक्ष" से नहीं खाना। यह सामर्थ परमेश्वर ने उसके हाथों में रखा। आज भी परमेश्वर वही कहता है "मेरे बगैर तुम कुछ नहीं कर सकते हो।" हम पढ़ते हैं **उत्पत्ति १:१२** – **और पृथ्वी से वनस्पति अर्थात अपनी अपनी जाति के अनुसार बीजवाले पौधे और फलदायक वृक्ष उगे, जिनमें अपनी अपनी जाति के अनुसार बीज होते हैं। और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।** परमेश्वर ने उसके बच्चों को वाटिका में किसी भी चीज़ की कमी नहीं रखी उसने भिन्न–भिन्न प्रकार के फलों को लगाया, जैसे कि, फ़नस, सेब, पेरू, चिक्कू, आम, केला ताकि हम खा सके। लेकिन वाटिका के बीचों–बीच परमेश्वर

ने "ज्ञान का वृक्ष" भी लगाया और उसके बच्चों को इस वृक्ष से खाने को मना किया। लेकिन उन्होंने परमेश्वर के बात के बिलकुल उल्टा काम किया। "आज्ञा न मानना यह सारे पापों का जड़ है जीवन में, आरंभ से ही। इसलिए परमेश्वर ने उसके ही हस्तकृति को अदन कि वाटिका से निकाल दिया। परमेश्वर ने हमे भी भिन्न–भिन्न खेतों से उख़ाड़ा है और हमे लाकर उसके दाख के बारी में लगाया है ताकि हम उसके लिए फलदायक बने। परमेश्वर ने हमे किस खेत में लगाया है ? **यशायाह ५:७** कहता है **– सेनाओं के यहोवा की दाख की बारी तो इस्राएल का घराना है, और उसका मन भावना पौधा यहूदा के लोग हैं। उसने तो न्याय की आशा की, परदेखो, रक्तपात ही देखने को मिला; धार्मिकता की आशा की; परन्तु देखो, चीत्कार ही सुन पड़ी।** इसलिए आप और मैं प्रभु के लिए "इस्राएल" हैं, उसके दाख के बारी में लगाए हुए। इसलिए हमे उसके साथ बंधे हुए रहना हैं। परमेश्वर ने उसके लोग, इस्राएल को लगाया है और उसकी आँखें उनपर हर समय है। परमेश्वर ने हमे उसके दाख के बारी में लगाया है, हमारा पालन–पोषण किया हैं और फिर इंतज़ार किया कि हम में अच्छे फलों को देखें। लेकिन वृक्ष ने कड़वे फल उत्पन्न किए प्रभु के लिए। हमारे द्वारा, प्रभु ने बहुत चीज़ो की उम्मीद रखी, यह की हम बहुत फलों को लाएँ उसके लिए, हम अपने जीवन को ध्यान से जीएंगे, हमारे द्वारा परमेश्वर महिमा और ऊँचा स्थान पाएगा। लेकिन परमेश्वर हमारे अंदर क्या देखता है? कड़वाहट, जलन, गुस्सा, घमँड़, हमने परमेश्वर को बहुत तरीकों से दुखाया है। लेकिन हमे नहीं भूलना है कि हम "इस्राएल" हैं, परमेश्वर के चुने हुए, उसने हमे खरीदा है और उसके लहु को देकर हम में से हर एक को मोल लिया है। हर छोटा पौधा जो उसके दाख के बारी में लगाया गया है, उसके लिए अनमोल है, उस दान को जो उसने क्रूस पर चुकाया है। क्यों? उसने ऐसा क्यों किया? उसने यह किया ताकि उसकी दीनता हम में देखी जाए। लेकिन वह हम में क्या पाता है, कड़वाहट, सड़न, बड़बड़ाना, हकलाने वाला व्यक्ति। हमारे द्वारा परमेश्वर बहुत से फलों की उम्मीद रखता है, लेकिन यह हमारे पापों के कारण हम परमेश्वर के अनुग्रह को खो देते है। याद रखें, परमेश्वर ने क्या कहा "तुम तैयार हो जाओ और तुम्हारे परिवार को भी तैयार करो।" हमे परमेश्वर के सामने कभी घमँड़ नहीं करना चाहिए, हमे याद रखना चाहिए कि परमेश्वर का श्वास हम में हैं। अगर वह श्वास हमसे ले लेता हैं तो हम दूसरे ही मिनट मर जाएंगे और हमारा शरीर बेकार का हो जाएगा, कुछ काम का नहीं। लेकिन, अगर उसकी आत्मा हम में है, तो वह हमे उसके सामने ले जाएगा न्याय के दिन।

उत्पत्ति ३:२४ – अतः उसने आदम को बाहर निकाल दिया तथा जीवन के वृक्ष के मार्ग की रक्षा करने के लिए अदन के बगीचे के पूर्व की ओर करूबों को और चारों ओर घ ूमनेवाली ज्वालामय तलवार को नियुक्त कर दिया। भिन्न–भिन्न प्रकार के पौधें को लगाने के बाद अदन के बागीचे में, परमेश्वर ने केवल एक आज्ञा उसके बच्चों को दी, "ज्ञान के

वृक्ष" से न खाना। क्योंकि अच्छा–बुरा जानना हमारा काम नहीं। लेकिन मनुष्य ज़्यादा ही बुद्धि चलाने लगा, उन्होंने उस आज्ञा के बिलकुल उल्टा कार्य किया और परमेश्वर के आज्ञा का उल्लंघन किया। परमेश्वर ने उनपर दया और अनुग्रह नहीं किया, उन दोनों को वाटिका के बाहर फैंक दिया और वह खुद वाटिका के फाटक पर खड़ा हो गया कहते हुए, "येशु मसीह के अलावा कोई भी अदन के वाटिका में प्रवेश नहीं कर सकता है।" जब तक हम येशु के लहु से नहीं धुल जाते हैं और उसके नाम से बपतिस्मा नहीं पाते हमे फलदायक भी होना हैं और केवल उसके द्वारा वरदान पाना है ताकि हम परमेश्वर के राज्य में फिर प्रवेश कर सकते हैं। इसलिए येशु बार–बार कहता है मुझ में बने रहो और फलदायक बनो, मेरे नाम में माँगो और तुम आशिषित और फलदायक हो जाओगे। येशु ही केवल मार्ग है, और हम परमेश्वर के राज्य में केवल येशु मसीह के द्वारा प्रवेश कर सकते हैं। **यूहन्ना १०:१० – चोर केवल चोरी करने, मार डालने, और नाश करने को आता है। मैं इसलिए आया हूँ कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं।** हमारा परमेश्वर हमे जीवन देने आया है, वह भी अनंतकालिक जीवन। येशु हमे फलदायक जीवन देने आया है। याद रखो, परमेश्वर ने मनुष्य को उसके ही हाथों से बनाया है, उसके ही रूप में, उसका ही श्वास हम में डाला है, वही मनुष्य अदन के वाटिका में सब–कुछ खो दिया आज्ञा न मानने के कारण। इसलिए पहला मनुष्य को याद रखो, और परमेश्वर ने उन्हे अदन के वाटिका से बाहर निकाला। हमे कभी नहीं कहना चाहिए "हम पहले से हैं" क्योंकि पवित्र–शास्त्र कहता है "जो पहले है वह आख़री और जो आख़री, वह पहला है।" हम कभी नहीं कह सकते हैं कि हम आदी से हैं, इसलिए हम सब जानते हैं। परमेश्वर हमारे अंदर घमँड़ देखने से नफ़रत करता है। हमे हमेशा कोशिश करना चाहिए प्रभु परमेश्वर के लिए फलदायक और वरदान से आशिषित रहने के लिए। केवल तब हम आशिषित हो सकते हैं। यह केवल परमेश्वर का अनुग्रह जिस कारण हम आज जीवित हैं। यह केवल परमेश्वर का दया और करूणा है जिस कारण हम हर दिन बचते हैं। **उत्पत्ति ३:१३–१८** कहता है – **तब यहोवा परमेश्वर ने स्त्री से कहा, "तू ने यह क्या किया?" स्त्री ने कहा, "सर्प ने मुझे बहका दिया, और मैंने खाया। तब यहोवा परमेश्वर ने सर्प से कहा, इसलिए कि तू ने यह किया है, तू सब घरेलू पशुओं और प्रत्येक वन–पशु से अधिक शापित है: तू पेट के बल चला करेगा, और जीवन भर मिट्टी चाटा करेगा। और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, तथा तेरे वंश और इसके वंश के बीच में, बैर उत्पन्न करूंगा: वह तेरे सिर को कुचलेगा, और तू उसकी एड़ी को चाटेगा। स्त्री से उसने कहा, "मैं तेरी प्रसव–पीड़ा को अधिक बढ़ाऊंगा। तू पीड़ा में ही बच्चे उत्पन्न करेगी, फिर भी तेरी लालसा तेरे पति के लिए होगी, और वह तुझ पर प्रभुता करेगा।" तब आदम से उसने कहा, "क्योंकि तू ने अपनी की बात मानकर उस वृक्ष का फल खाया जिसके लिए मैंने आज्ञा देकर कहा था कि तू उसमें से न खाना, इसलिए भूमि तेरे कारण शापित है। तू उसकी उपज जीवन भर कठिन परिश्रम के साथ**

खाया करेगा। वह तेरे लिए कांटे और ऊंटकटोरे उगाएगी, और तू खेत का साग–पात ही खाया करेगा। आज्ञा को न मानने से हमारे जीवनों में श्राप आता है, परमेश्वर को पहले मनुष्य को श्राप देना पड़ा क्योंकि उसने आज्ञा नहीं माना। हम कौन है? हम परमेश्वर का आज्ञा हर क्षण नहीं मानते। हमारे भीतर कुछ भी महान नहीं हैं, हम किसी वस्तु के योग्य नहीं। परमेश्वर ने ही हम पर दया, अनुग्रह और प्यार दिखाया है। उसने हमे अब तक हमारे पापों और नीचता के अनुसार दण्ड़ नहीं दिया।

आज हम पर परमेश्वर का अनुग्रह येशु मसीह के कारण है। वह तुम्हारे और मेरे पापों और लज्जा के कारण मरा। जब परमेश्वर हमारे नीचता को फिर एक बार देखता है और हमे दण्ड़ देने के लिए आता है, तब येशु मसीह ही है जो परमेश्वर और हमारे मध्य खड़ा होता है, हम जो उसके बच्चें हैं, हमारे लिए निवेदन करता है, येशु पिता को याद दिलाता है कि उसने उसके जीवन को सारे मनुष्य–जाति के लिए दिया है। येशु माँगता है पिता से कि एक और मौका मिले ताकि हमे फिर एक बार उसके दाख के बारी में लगाए, मिट्टी पर फिर हल चलाए, खत और पानी हम पर डाले और एक और बार हम उसके लिए फलदायक बन सकते हैं। लेकिन अगर हम अपने नीचता में बढ़ते रहेंगे, वह हमे आख़ीर में काँट के आग में फेंक कर नाष करेगा। इसलिए, हमें प्रभु परमेश्वर से प्यार करते रहना हैं हमारे पूरे हृदय, आत्मा और मन से, हम उसके नाम को महिमा लाएँ और केवल उसे ऊँचा उठाए और उसके नाम को और ऊँचा उठाए। यह परमेश्वर के नाम को फिर महिमा लाएगा। याद रखो, येशु मसीह ने हमे उसका जीवन दिया है, हमारे पापों को और लज्जा को क्रूस पर ले लिया है। हमे उसके बलिदान को जो उसने क्रूस पर दिया, नहीं भूलना चाहिए और यह कि उसने हम में से हर एक को उसके खून से बचाया है। उसके बिना हमारे लिए कोई जीवन नहीं जैसे दिया गया है यूहन्ना ३ में।

यह संदेश हमारे जीवनों में आशिष लाएँ।

पास्टर सरोजा म.